Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 12 तिरिछ

तिरिछ लेखक परिचय उदय प्रकाश (1952)

जीवन-परिचय-
समसामयिक हिन्दी लेखन में अग्रणी एवं महत्वपूर्ण लेखक उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवारी, 1952 के दिन अनूपपुर, मध्यप्रदेश में स्थित सीतापुर नामक स्थान पर हुआ। इनकी माता का नाम गंगा देवी और पिता का नाम प्रेम कुमार सिंह था। इन्होंने बी.एस-सी. करने के उपरांत सागर विश्वविद्यालय, सागर मध्यप्रदेश से हिन्दी में एम.ए. किया। इन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भारतीय भाषा विभाग में कुछ समय तक अध्यापन भी किया। इसके बाद मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग में विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे।

इन्होंने 'दिनमान' के संपादन विभाग में भी कार्य किया। नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'संडेमेल' में सहायक संपादक भी रहे। वहीं प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के टेलीविजन विभाग में विचार और पटकथा प्रमुख भी रहे। साथ ही इन्होंने टाइम्स रिसर्च फाउंडेशन में पत्रकारिता का अध्यापन भी किया। उदय प्रकाश जी निरंतर स्वतंत्र लेखन, फिल्म निर्माण और अखबारों तथा फिल्मों के लिए लेखन में रत हैं। पिछले दो दशकों में समसामयिक हिन्दी लेखन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे निरंतर लेखन कार्य में रत हैं।

रचनाएँ-उदय प्रकाश जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं
कहानी-दरियाई घोड़ा, तिरिछ और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरी वाली लड़की, दत्तात्रेय के दुख, अरेबा-परेबा, मोहनदास, मेंगोसिल आदि।
कविता संग्रह-सुनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम आदि। निबंध-आलोचना-ईश्वर की आँख।
अनुवाद-कला-अनुभव, इन्दिरा गाँधी की आखिरी लड़ाई, लाल घास पर नीले घोड़े, रोम्याँ का भारत।
फिल्म-टी.वी.-इन्होंने अनेक धारावाहिकों तथा फिल्मों के स्क्रिप्ट लिखे हैं।
साहित्यिक विशेषताएँ-उदय प्रकाश जी ने अपने विषय-चयन, सीधी-सादी भाषा, ताजगी भरे मुहावरों और अनौपचारिक संवेदना के कारण पाठकों को आकृष्ट किया। कविता, कहानी, निबन्ध, लेख-टिप्पणियाँ, आलोचना और टेलीविजन फिल्म आदि के लिए लेखन के तमाम क्षेत्रों में इन्होंने नवीन प्रयोग किए। पिछले बीस वर्षों की श्रेष्ठ हिन्दी कहानियों में आधी से ज्यादा इन्हीं की होंगी। इनका साहित्य तथ्य और कथ्य का विपुल विस्तार लिए है।

तिरिछ पाठ के सारांश

'तिरिछ' कहानी का कथानक लेखक के पिताजी से सम्बन्धित है। इसका संबंध लेखक के सपने से भी है। इसके अतिरिक्त, कहानी में शहर के प्रति जो जन्मजात भय होता है उसकी विवेचना भी इस कहानी में की गई है। गाँव एवं शहर की जीवन-शैली का इसमें तुलनात्मक अध्ययन अत्यन्त सफलतापूर्वक किया गया है। गाँव की सादगी तथा शहर का कृत्रिम आचरण इसमें प्रतिबिम्बित होता है।

लेखक के पिताजी जो पचपन साल के वयोवृद्ध व्यक्ति हैं, उनकी विशिष्ट जीवन शैली है। वह मितभाषी हैं। उनका कम बोलना, हमेशा मुँह में तम्बाकू का भरा रहना भी है। बच्चे उनका आदर करते थे तथा उनकी कम बोलने की आदत के कारण सहमे भी रहते थे। घर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी।

एक दिन शाम को जब वे टहलने निकले तो एक विषैले जन्तु तिरिछ ने उन्हें काट लिया। उसका विष साँप की तरह जहरीला तथा प्राणघातक होता है। रात में झाड़-फूंक तथा इलाज चला दूसरे दिन सुबह उन्हें शहर की कचहरी में मुकदमे की तारीख के क्रम में जाना था। घर से वे गाँव के ही ट्रैक्टर पर सवार होकर शहर को रवाना हुए। तिरिछ द्वारा काटे जाने की घटना का वर्णन ट्रैक्टर पर सवार अन्य लोगों से करते हैं। ट्रैक्टर पर सवार उनके सहयात्री पं. रामऔतार ज्योतिषी के अलावा वैद्य भी थे। उन्होंने रास्ते में ट्रैक्टर रोककर उनका उपचार किया। धतूरे की बीज को पीसकर उबालकर काढ़ा बनाकर उन्हें पिलाया गया। ट्रैक्टर आगे बढ़ा तथा शहर पहुँचकर लेखक के पिताजी ट्रैक्टर से उतरकर कचहरी के लिए रवाना हुए।

यह समाचार पं. रामऔतार ने गाँव आकर बताया, क्योंकि वे (लेखक के बाबूजी) शाम को घर नहीं लौटे थे, विभिन्न स्रोतों से उनके विषय में निम्नांकित जानकारी प्राप्त हुई। ट्रैक्टर से उतरते समय उनके सिर में चक्कर आ रहा था तथा कंउ सूख रहा था। गाँव के मास्टर नंदलाल, जो उनके साथ थे, उन्होंने बताया। इस बीच वे स्टेट बैंक की देशबन्धु मार्ग स्थित शाखा, सर्किट हाउस के निकट वाले थाने में क्रमशः गए। उक्त स्थानों ने उन्हें अपराधी पवृत्ति तथा असामाजिक तत्व समझकर काफी पिटाई की गई और वे लहू-लुहान हो गए। अंत में वे इतवारी कॉलोनी गए।

वहाँ उनको कहते सुना गया, “मैं राम स्वारथ प्रसाद, एक्स स्कूल हेडमास्टर एंड विलेज हेड ऑफ..... ग्राम बकेली ...।” किन्तु वहाँ उन्हें पागल समझकर कॉलोनी के छोटे-बड़े लड़कों ने उनपर पत्थर बरसाकर रही-सही कसर निकाल दी। उनका सारा शरीर लहू-लुहान हो गया। घिसते-पिटते लगभग शाम छः बजे सिविल लाइन्स की सड़क की पटरियों पर बनी मोचियों की दुकान में से गणेशवा मोची की दुकान के अन्दर चले गए। गणेसवा मोची उनके बगल के गाँव का रहनेवाला था। उसने उन्हें पहचाना। कुछ ही देर में उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार इस कहानी के द्वारा लेखक ने सांकेतिक भाषा शैली में आधुनिक शहरों में विकृतियों एवं विसंगतियों पर कटाक्ष किया है। दूषित मानसिकता से ग्रसित शहरी जीवन-शैली “तिरिछ” की तरह भयानक तथा विषैली हो गयी है। वास्तविकता की तह में गए बगैर हम दरिन्दगी तथा अमानवीय कृत्यों पर उतर आते हैं।

लेखक का मन्तव्य (उद्देश्य) निम्नांकित पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है, “इस समय पिताजी को कोई दर्द महसूस नहीं होता रहा होगा, क्योंकि वे अच्छी तरह से पूरी तार्किकता और गहराई के साथ विश्वास करने लग गए होंगे कि यह सब सपना है और जैसे ही वे जागेंगे, सब कुछ ठीक हो जाएगा।” लेखक पुनः कहता है-“इसके पीछे पहली वजह तो यही थी कि उन्हें यह बहुत अच्छी तरह से पता था कि वे ठेले सपने के भीतर जा रहे हैं और इससे किसी को कोई चोट नहीं आएगी।” इससे (इन पंक्तियों से) कहानी में लेखक का संदेश स्पष्ट परिलक्षित होता है।

https://www.evidyarthi.in/